



INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam Tune - Lo 14

ENROLLMENT NUMBER : 2 2 5 4 7 0 3 0 8 2

NAME OF THE STUDENT : NIKITA (HAVHAN

STUDENT ADDRESS : Akbarbur , Baharmbur , Ghaptabed UP

PROGRAMME TITLE & CODE : MHD: Masker of Arts (Hinds)

COURSE TITLE : Kahani : Swaruh Ar Vikas

COURSE CODE : MHD - 03

REGIONAL CENTRE NAME & CODE: 07: Delhi-1 (Mohan Estate (South Delhi))

STUDY CENTRE NAME & CODE : 0710; Delhondhy Colkge (710)

MOBILE NUMBER : 73 6 3 8 2 2 4 1 2

E-MAIL ID : nikitachauhan 7838 @ grad · com

DATE OF SUBMISSION: 28 -04-2014

(SIGNATURE OF THE STUDENT)



इंदिश गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068 Indira Gandhi National Open University Maidan Garhi, New Delhi - 110068

IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number: 2254703082

07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))

Name of the

MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)

Programme:

NIKITA CHAUHAN

Father's Name:

VEERPAL SINGH CHAUHAN

HOUSE NO 186 GALI NO 2 , BUDH VIHAR

AKBARPUR BAHARAMPUR GHAZIABADGHAZIABAD UTTAR PRADESH

Pin Code :

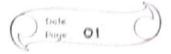
of an demand at the Study Connect Economistics Colors or any other Setate Service of SUNDS to









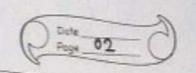


भग. ५-च.डी - 09 कहाती: ४०१४प और विकाश्य (२००उ-क)

(क) वस्तु अपर जिल्प की हारि से 'पराभा प्रख' कहाती ला

विश्वलंपण कीजिं।
प्रश्तिश्वलं कीजिं।
प्रश्तिश्वलं विशेषा अस्ति अस्ति हिंदी के सुप्रामिष्ठ स्वाहित्यलार्
स्वाद्यालं सुरुअतः अहअमवर्गीय जावन के क्याकार् है अह्यवर्ग की अस्त्रातियों कित्रातियों विशेषाआसों , प्राहें आदि इतता प्रवलं की अस्त्रातियों कित्रातियों विशेषाआसों , प्राहें आदि इतता प्रवलं किश्राद्या करने वाला अन्यं कहातीकार नहीं है दि विशेषी परि स्पेयों का विशेषता है।

यशपाल भी अपनी कहातिथों में उस प्रणितिम परिकता महथकी की अप्रिक की प्रश्न कप स्ने रेखंगित करते हैं. जो सामापिक, राज-तिमिक कार्ति का सम्प्रिक और वाहक हैं। ज्ञावपात की भ्रानिका में प्रापाल भी ते कि सम्प्रिक और वाहक हैं। ज्ञावपात की भ्रानिका में प्रापाल भी ते कि महिल्म की उद्देश्य सभी अवस्थाओं में महुक्य में वितिकता और करिया की प्रानिकों की वित्वारियों की महिल्म की प्रानिक की वित्वारियों को प्रकारी करपता का आवार जीवत की ओस वास्ताविक ताई ही ही ती हैं। उनकी करपता का आवार जीवत की ओस वास्ताविक ताई ही ही ती हैं। उनकी के अपने का निम्न का निम्न का निम्न अपने का निम्न की स्वारिय में जीवत के यंग्री का निम्न का न



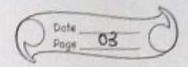
प्राथा पुर्व कहार्न हिंदी की अरब्धात साहित्यकार अधापाल भी प्राप्ति राधनी प्रथम उत्तरी कहाती संग्रह ज्ञानवात में अवाधित हुई। यह ध्यापाल भी के उस पोर की रपाला है अब वे रपाला और प्यार्थ के अंतः अंबंधों पर भिंतन कर पहें भें आर आतर में कि लेखन भी हाधी विरंतर अपर्त क्लाते परिवेश पर मंदिर रहकी पाहिए। विश्न

भगार रोपकाता अरह प्रवाद हमारी पसंद वापसंद अर वाप राष्ट्र पर आधारित होता है। ही का उसने प्रभार महाबी के युवा और चरित्र का त्यारक्याव कर सकते हैं । यथायाल भी ते इत्ही दी आवश्वड़ों का

इश्तेमाळ करके पराभा सुख्य महाती की प्पता की हैं।

पराथा प्रश्न कहाती से दो प्रश्न पात्र क्षेत्रच से की और उनिमा है। सरी अवीऽडम् का आविवाहित पुसर्प हे अप डामीमा संधिक्तील अहयकारिंग 18a11हिता स्त्री विष्ट महानी उसकी और उसकी पश्वार सामाव्य संतुष्टि की स्थीते की अंग इशार करते हैं। जे हर क्ष अहम्मार्थ में भूल जमणीरी भी प्रम में विषमात है। एक और यह भिरट्र सेठी जैसे उन्ने लोग है, जो अपनी मेहतर आर् भीजा वह तरीके से समलता को प्राप्त कर अधिक उलाने करता है। परंत जीवन में भिली लभाम आधिक समलता के बावपूर । भिर्द सेठी को अपनी वेपारी ऑर प्यतीया आधूम होती है क्योंकी वे गुस्मी सुख से विभिन्न हैं विभिन्न और सामाव्य जीवर जी ने वाभी कार्रीमा आर्थिक उत्ताम व सम्रोष्ट्र की तलाम जरमे हैं।

वस्तु और भिष्प की शाहि से पराभा अरव कहाती का विश्लीपा:- लिएका एक और मला के दीत्र में साक्रेस होता है तों दूसरी और अपनी साहित्य के माध्यम से तर्म - तर्म

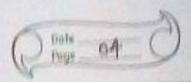


नर्म प्रतिभात गरता है। प्रगतिवादी जेपक कापाल की प्रारीष्ट्र कारावी पराधा थुख वस्तु ऑर भिल्प की हारि से किरवालिक्षित कार्तों को उद्घादिन करती हैं—

ट्यंग्य और सामाधिक विसंगतियों का उदादन यापाप कहानियों में भाषा की आभीत्मकी सरल एवं सहज रूप में मिलती हैं। उनकी वेहद सरल और भाम ध्राक्रम केंद्रित रही हैं। अपनी कहानियों के भारुथम से फहाँ उन्हों ने पास्वेड पर हल्के उनके त्यंग्य किये हैं। परने कि लखनवी अंपाज तो वही द्वा का आधिकार कहानी के भारुथम से सामाधिक विसंगति को उभाम हैं।

अधि का समावित प्रभोग उत्हों अपनी महावियों में इसरी आधाओं धंसे र्द्ध, अंग्रेजी, अरबी, पारुसी आदि आपामा के शब्दा का प्रभोग करते से परहेज वही किया है। अवकी कहावियों में कि और पहां संस्कृत आधा के शब्द कियों ते इसरी और उर्द्ध आधा के शब्दों की भी अरआर रहेगी।

सीआजिक जीवर पर केदित संगणां की महाविया अभ्राप्त जीवत से पुड़ी रही हैं। क्रांगिक्तरी भागांजिक जावजावन केदित रही है। उटहाने साधारण जवता के द्वर्य: पि ऑर संपाम को अपनी कारवावियों में आज जैने के प्राप्त के द्वर्य: पि ऑर संपाम को अपनी कारवावियों में प्राप्त के साथ अभिट्यक्त के साथ अभिट्यक्त किया द्वर्मी का चाँप पहाड़ की औह हो अथा, स्मय जावन का कोई उपाम व या परेत अध्यो से अध्योक रात बीत युकी भी । जोड़े से पोनी काप रहे की अध्योक के किए यह सहा द यी कि उसकी वजह से

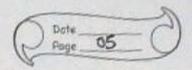


पाडे में क्या तरह में, हो सकता है की वह बिमारी ही हो पाक?

स्त्राामिक आर स्वारास्मक दील्याक का एमावा तर क्ष्य दूर्म ही स्राया करायियों और वर्णाओं की भर नाट करमें हैं, वहीं के स्राया करायियों और वर्णाओं वर नाट करमें हैं, वहीं के स्राया करायियों और वर्णाओं की भरनिया के तम्म की करायियों में स्वरूप भर्मिकीयों भी नामाक्ष्य स्वरूप में अस्मिकि और संस्थानिक दील्याकों की अस्मिक स्वरूप में अस्मिकि और संस्थानिक दील्याकों की अस्मिक स्वरूप में

म अल्या का सार्टि में तरिवाप्ति हावा त्रिक्त कर वर्ण अववाप्त्र के अल्या का सार्टि में तरिवाप्ति हावा कि स्पर तर जाना जा अववाप्त्र में अल्या करवारित में सार्टि में तरिवाप्ति करा वर्ण अववाप्त्र करवा तराना निवास करवार वर्ण अववाप्त्र करवा तराना निवास करवार वर्ण करवा तराना निवास करवार वर्ण करवा वर्ण करवार करवार वर्ण करवार करवार वर्ण करवार करवार वर्ण करवार क

अभितेत बेल जा अहसास अहमाज की जाती परामा सुरव अहमकाध्य संक्षित दामरे और अहमकाध्य तंत्रिकता को सद्दाई को सद्दाई को रेखांकित तो करती ही है, साअंतवादी और स्वीवादी साम के अभाववीय शांसक के तरिकों को भी उप्पायन करतीहै। प्राथ ही प्रशास की भावव में सास्तेत्व बोल व्या अहसस और प्राथ के विस्तार को भी स्पष्ट करते हैं।



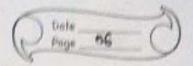
भह्यपूर्व के आउंवर और स्वोस्वलपूर्व ला पित्रण

निर्मात तरात्र त्रका कहावी क्ष आहत्त्र से तर्शिक क्ष अहमतर् अभर्त स्वार्ध और झुठे मूल्यां भी वर्दालत दित-ब-दित किस गरह अभाववीय और रवोरवला होता को रहा है इसे भी इस कारावी में भी ही शुक्स्थित के साथ प्रमूत किया गथा है। किस आदर्भी ते विवा प्रहसान प्रार्थ अपने जीन अर वह परिश्रम की लभाई इसे अंट कर की उधारे कि कर भी नहीं पाहा असकी कात पार्ट औं भी हो उसे भिराम कर्मा

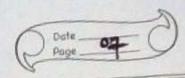
मिल्प प ताप्रावेकिय आमा इति । कार्ता कु कहारित के कार्तान्त्र मे विपार की भूषिका अध्यार्भ्त होती है। उसी विपार के अनुस्प व तात्री भी आवपारंग व्यत्प हैं। "तंतरा में से अहा राजा रना-अक्सा की ट्रांके से किन प्रतिनिधि कहाने हैं। इस कहाने में विचार ही अक्ष्य प्रम से महत्वपूर्व हैं। यशपाल प्रचार के अनुरूप पार्ज स्वितियों और आमा का मार्च करते हैं।

सरक में में भी तह की तरिया गई ती तर्म की भी भी भी भी भी भी न्तलप् का पिञ्नम हिमा भेठी ते पूछा - रात श्रुव तींप आर्टे ? ऑह हर्श हिंगा। वाया समस्य भी कि पाद । भी भी भी अही ।

वाराज्य के प्रजीत में में मिल ने में में में में में ने नाम ने नाम में काशिशि प्रमा किह नेता किह्न गिर्म के काराडिक जिल्ला मान जा समता है। उद्दीत नेमपद की समृद्ध विशस्त



को काओ क्रांशा विश्वापाल भी का क्रांशी के अल्लिम क् अध्यक्षित त्यावा भी तराख्यक्षित आहे तरिवर्शनी व्या आवपाश्च Exellated coldent of short of labor we wanted up की कामात्रकता के साथ हमाई समझ प्रश्तुत गर्स है परामा सन्त कहाती अहत्रकाश्चिम संक्रानिय दाभद्र आर अल्पवन्ति सानिकाता भी संस्वाई को स्थालिन करती ही है, सामीतवादी और मेलीवादी सान के अभाववीय अभवत के पराम की अर्थ कर्षा. क्र किल्ला अवरथा और कल्प शिल्त में अधितम्प्र ल्या तराना देख कहाप्त व स्वयं पत्कानीय अभात भी त्रेयः स्वितिस्त को स्वाम और सटीक अप से अस्तिरमण्य करता इ. वर-र समकात्माच तरिक्तियम अप्त तरिविधिमा व्यक्त अध अधादिक कारता है। अदिर एक अवात आदि के विध्वित भिभित का बाज ह - वारत क्व छिल्प विषद्ध क्व छिल्प मा अर्थ ववार्त भी काला अधीत भकाव आ अदिर को अ।११ मोक विश्वि भ क्वार की काम वास्तु अवप भवंद्यी शास्त्र क्वारामें ही ्रेस्थानिया के बार कामार यह मानव को कार्या की जीवन क्षित्र की काल के अल्कात अपिर-अकान आदि साव द्वार क्षाते की विश्व औ, इसी विश्वि के अनुसार इतके मिर्शाठ होते पार्क अग रहे हैं, किए भी प्रियान में पास्तु अवन का अपान के लिए अय - आकी मा है। वस्तुविधा जह है। वह अधि क्षी-अख - आकी का आधार अभी अह है। वास्तुविधा जह अधिम के लिए कर्म लाव के जारण आज अन्त परिवार एवं माभाज की उरकी सीए त्यादा देखे जाते हैं।

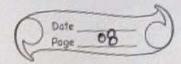


श्रित में जहाती के विकास को रेश्वाली की जिल्ला - ष्रित में भी सही भागने, अध्यान कालमी का आविभवि हत्वीसवी भताब्दी में ही हुआ | सर वास्ट्र स्कॉट में अपनी कहातियों में अतिहास की पुनर्शि की | इतकी फहानियों में लोगाग्रेथ नाथकों की उस हावि को गदा । जिसका स्थर ब्रिटेन ऑर ब्रिटेन के सहर अनेक कहाानीकारों के भन में अब समय वक्त रहा

जिसमें दारा के अहाकात्म श्राप्ति कर्ता है अहं यह जीवन के स्थाप में कहानी को अहात के अहाकात्म हास है। हम निजी विश्वमता के महत्वपूर्व श्राप्ति कर्ता है। अहं निजी निजी के अहं न

बिदेन के जहानी जा विजास

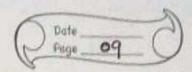
बिदेन के जहानी जार्र में विद्या साहित्य में जहानी विद्या
को प्रति छित करने में महत्वपूर्व भूकिणा विभाभी बिदा सही
भाभने में आबुनिज कहानी जा आविभवि विद्या के राय में
डिआ बिदेन में कहानी को एक लोकाप्रिय विद्या के राय में
स्थापित करने जा अया वालए स्कॉट की जाता है स्कॉट
हे बिहास को आव्यार क्लाक्य जी कथा - साहित्य रूपा
उसमें आने भाने वाली कथा - लेखकों की पति को
विहासिक हार्से अपनाने को प्रति कथा विदार एसकाँटे



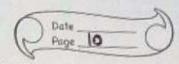
अफ़ि किन-मेंह, डिप ऑफ द लेम्डिस जॉक ,द टेपेस्टीड धेवर आदि । उभी समय शंकि लुई स्टीवंसन ते रहस्य रोमानं से अरपूर जानीमाँ क्रियकर विदेन में जानीमार्ग के पाठलवर्ग को तथार कर्ल में अहलपूर्व अलेका निमामी ।द न्यू अरेबियन वार्ड एस, मोर त्यू अरेबियन तहिएस उनके प्रमुख काली

19 की शताब्दी में ब्रिटिश करमी को परिपक्त क परिष्कृत कर्ताते का अभ चार्ल्य १८केम को जाता है। ३-६१ में कर्रामी में सामाजित ध्याचिवाद को प्रतिक्रित और जीकाप्रियता दिलार्त में महत्वपूर्व भूषिका विभागी करमी विद्या में ठेकेस ने मर्थ पर प्रथाण किया । ३६६ में ब्रिटिश समाज में द्याप्त कुरी। तथी पर रवुलकर प्रधर कमा । १३ केस ते कशमियों और ज्यप-मास्त के भार्ष्यम से अपने समाज की जो जो साजीयना की उसका ब्रिटेन पर भाषक प्रभाव पदा । अक्के शरा गर्ट ग्राम विम्न आज भी समरवीय हैं

डिकिस की राजाणियारी परपर को अपनी कहानियों में अतिल्ड केट है आजे कहाया | उत्होंने कहानियां में अपेपिक्षकता को प्रतिष्ठित किया | बिद्रेन के अपिक्षिक जीवन के स्वहम विवरण , वातावरण की यथार्थ अक्षिरमक्ति, यास्त्रों का संवर्ध, मांती परंपराअन अगर अतीत कर्ततं अध्वीय संवंधी का अभाशिक पित्रण क्षेट की कहानियों में उपस्थित होता है । ब्रिटेन में जहाँ एक ओर् । डिकेरने जी तमतीय अपनी कहानियों में कर रहे के पूर्वी इसरी और की तमतीय अपनी कहानियों में कर रहे के पूर्वी इसरी और कातन डांग्ल अपने कहानियों में कर रहे के पूर्वी इसरी और खातन डांग्ल अपने कहानियों में कर रहे के पूर्वी इसरी और



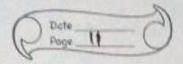
क्रिस्टी प्रस्त अरविकाओं में आप कहामां को संक्ष्म विवश्न वापायश्च में अपरिवा की मानवीम क्षियों का अपना कार्यान को संक्ष्म विवश्न में अपरिवा होता है। बिट्रेन में गहाँ कर आर्थ की तम्मीज्ञा आप अतीत कर्म मानवीम क्षियों का प्रभाविका मिनवा की तम्मीज्ञा अपनी कहामियों में कर रहे पे विही इसरी और अपनी कहामियों में कर रहे पे विही इसरी और अपनी कहामियों में कर रहे पे विही इसरी और की तम्मीज्ञा अपनी कहामियों में कर रहे पे विही इसरी और की तम्मीज्ञा अपनी कहामियों में कर रहे पे विही इसरी और अपनी करा संबंधों को विस्थ करा रहे पे जिस्की किया विहेन के आपक्षिक जीवन को विस्थ करा रहे पे जिस्की का किया विहेन के आपक्षिक जीवन को स्थान करा रहे पे जिस्की के आर्थ कहामां



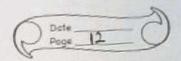
म्यानार क्षाकर कार्या क्षेत्रक क्षेत्र

अविश्वास में विज्ञान प्रांकिनि के अधूम्प विकास ने विज्ञास आव्यापित कथा आहित्य को पनपने का पथित अक्सर दिगा।विज्ञास आव्यापित कहा।विशे के लेखक के रूप में ह्न-जी वेल्स और आविर भी क्लोफ को कामी प्रतिका । भिली। दोनों लेखन की प्रभुख स्थिता यह थी कि विज्ञान की निरंतर प्रभित और उसके खतरनाक प्रभोग के बीप भात्मता का भविष्य केला होगा। ह्य-जी वेल्स का विक्रवास था कि भाव्म जाति का समूह नहा ही जाएत वही आविर सेर कलाकी का विचार था कि भाव्म जाति नए किस्म के अधिक सहम

उन की अपालमा में जीवन की यांत्रिकता, नैतिक श्वीश्विपमा सुंद की अपालमा और तसही तथा अवसाद व अजनवीम के कुल की अपालमा और तसही तथा अवसाद व अजनवीम के कुल का लाना जिसे पतन आहे दिया जिसे अपालमा को द्रम्भर के अंतर्गत भावतीय पतन अग्नि सामि की कहानियों को द्रम्भर के अंतर्गत किया पाला है। इकि ह्रम्भर की कहानियों के व्यवक के अप में शेल्ड अहल को जानी प्रतिका किया विवाद को जानी हैं अनिय किया को अवहानी हैं अनिय का अवहानी हैं अवहानी के सम्मान वा अवहानी हैं अनिय का अवहानी हैं अनिय का अवहानी हैं अवहानी के सम्मान वा अवहानी हैं अवहानी के सम्मान वा अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी के सम्मान वा अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी के सम्मान वा अवहानी हैं अवहानी अवहानी हैं अवहानी अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी अवहानी अवहानी हैं अवहानी हैं अवहानी अवहानी हैं अवहानी अवहानी

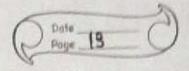


प्रशिद्ध कहानी में अधिकाश्ची की सम्बद्ध परंपर रही है। अगापा क्रिस्टी अर्थ पी.डी. जेम्स प्रेमी अरिवेकाओं में पास्त्री के ४६४म रोभार्स से अध्युर विषयी पर महानियां किरवी। अ-य लेखिका अर् ते भादेश के देशित और अभिव हारि की आशाओं, आवाहाओं और मिताओं को अपने अपने कशाविशों में स्वर विधा क्रिक्टिन भें हमफी एड ही अपनी स्त्री पारित्र की अववाशों अपन क्यानियों को अधित्यात करते के किए कहाती की अधित बार्णाओं मो पारप डिक सहाय । हिसे अर्थ त्मारतार स्वादी या स्थान क्रिया उनकी प्रमुख महानियाँ हैं - एकिए न गार्डेस पार्टी न किहल गर्ल आदि। डेरे ड्यू भेरियों की कहानी स्त्री अनिविद्यान को स्काता व स्तीकता से संमोधित करती है। डेर्न ऑस्पि कर स्त्री पुरुष की विभिन्न भर्गाद्याओं और उससे उत्पन्न धर्म वार्त तलाय का मित्रण करने में महारम हामिल वर्त । इन लगाव हा अलकी कहा।विभो में ४६४म अर्थ श्रीम श्रीमं को विभिन करते में अहत्वपूर्व भूषिका विभाभी । अगिर्म की कशाविशा र्भातः रहरम प्रद्यात है भगर यह रहरम क्ष्री चारित्र भी भावासिक द्वित्वाऔं को वस्त्रवी प्रस्तुत करता है। उनकी प्रभुख कहातियों हैं - प वर्ष्ट्र कम विडं कम वेदंर हैं धर्मी क्रिसम्म अर्जी स्टोरीय आदि



Att की खप्रारिष्ठ लाखिका डोसिंग लेखिश की meth भागवीय अनुभव में निहित निक्षाप्रद रेक्य की रवीज कर्र अपि सर्यास्त तथा सामाधिक वंदानी का अनुधा के आपस पर पड़रे वार्ष भ्रभावों का अ-वंपन कर्र के किए विश्वात है। क्यों शेस की महामी वेश प्रकार और अर्थ की मी वार्थ का थपार्थ नित्रण कर्मी है। ११८ना औ अपन अर् बरिल बेनिक्रें मिन विश्वसुद्धित विदेश कहाती का प्रमुख लेखिका ही उन्होंने अतम् कहारिया प्रिम अपने कहारियों में लीवन की र्राटिसपाओं को त्याप्ति । किया १०६-ग और वायन अहर बेरिल बेनिक की काशामियां विभ्नं की के कार्या के मध्य हमके प्राथम की विसंगातियाँ, अशंतीयाँ और अभिविषां का विश्वस्तीय पिक्रा करती है। अन् भवेर लाववाला वे आरम अर्थ तथनेथी देगा. भी सांस्कारिक मुठभेड को अभी कहातियों का विषय कार्या उनकी कार मिथों प्राति है कि अप्त अपि पार्चिम के बीच स्थार्ष मध्य क्षिण होते. प्रमातमान क्षिमे अल्पा निम् किमा निम् किमान क्षिमें अपर भनीवडामिक जिल्लाओं में निहित हैं।

स्कार कार स्मार है कि पशापि कार की उद्दा । विदेन
अभिरिका में डुआ तपापि कारका विकास करेगीय देशों में डुआ । विदेन
को महानी जो विकासित व । विस्तृत कर्स में अहत्वर्श श्रूकी जा
क्षित्रायों । प्राप्त में । विदेन की अधिकाशं कहानियाँ (या क्षित्रधान निभय
अभीरे अवादी आर आद्यूकी रहस्में से पार्श्व थी। वर्तभान समय
में अभेजी कहानी मानव यात्रि के मिका प्राप्त अपो पर हथान
कोंद्रित कर्म है। इसके वारण यह का सकट, पास्थाय जीवन की
विश्व विश्ववला अर्ह अमुबीय मूल्यों का विद्यान ही। प्रिष्प
की दृशि से आप्य कहानी का प्रथित पार्तमाजीन हो युका है।
कोंद्रे साम ही उसके अतिर विहित मूल्यों का लास भी दुआहँ।



विविध् आन्याम आवाओं, में आत्रीध्य व्यव्यय क्रांताप तर

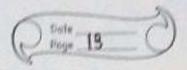
के क्षिणांत्र में तेर-तार्रणांत्र था हात रहा ही

के क्षिणांत्र में तेर-तार्रणांत्र था हात रहा ही

के क्षिणांत्र में तेर-तार्रणांत्र था तिला अत-नाम के अप स् अन्तिम् अनिका अनिलाम के निर्माण का निर्माण के निर्मण के निर

हत विधाओं में कहाती की क्ष्य जाक्रिय के तार्थ में भार्य हैं भार्य में भार्य के साह कि का जार्य किया। वर्णभाव समय में भार्यान जा जिन्ह में भार्या के तार्थ का जार्य किया। वर्णभाव समय में भार्यान जा जिन्ह में भार्या के तार्थ का जिन्ह में भार्या में भार्या के तार्थ हिम। अवाति के तार्थ हिम

की ग्रेमारी करायक है। इसी अभन इंविद्रवान द्रग्रेट की भी



विशिक्त भारपार अलाख्ये. में शालीध्य कहाया स् तराताप तर

बिविध मारतीय भाषाओं में आधुतिक कहानी ला भूत्रपात भाषाओं ने जारतीय में भंकिर भाषा ने सांस्कृतिक आरतीय भाषाओं ने जारतीय में अनेक नवीन विधाएं प्रारंभ हुए। इस विधाओं में कहानी का कि लोकप्रिम विधाएं प्रारंभ हुए। इस विधाओं में कहानी का कि लोकप्रिम विधा के स्वप में स्त्रपात हुआ।

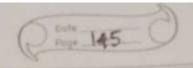
12 4 0

कहानी प्रणाधीत करें। अंक्रिमचंद्र न्यादर्भी, विदेशाय देशोर काव हिल्ला कि कालावा मेंड कि वेपादत , म्यावन के प्राप्त साहित्यकारों का वांच्या करानी के विकास में महत्वपूर्व योगदान रहा

अोडिसा आधा में कहाती पक्तीओहत केनापति की उत्काल वीपिका वाभक पश्चिका में प्रकाशित लक्ष्मितिया नाभक कहाती को ग्रामद पदमी अध्यानक आस्तीम कहानी होने का अंथ देशा जा सकता है। सकीरशहर संवापति की ही रेक्ती वाभक्त कहावी को आडिया की पहली कहानी समा जाता है। हलाने आकांका अंगर अपालित अवाविश्वास के वीच वंदी हुई एक विस्ता आयीम भागी के उरवद जीवत का नपार्थ पिनामान क्रिया गथा है।

भराष्ट्री आता में कहाबी भराष्ट्री में बान प्रभावक नामम पात्रका में प्रकाशित अपदेश कपाओं को आध्यान भशही कहाती का अंदभ कहा जा पकता है। अशही के भनोदंपन आही विवंदा पंदिका में भकाशीर एक मांधरावे आहावपाठा और हरीतारायण आप्ते के यंपादन में कळालूक नागक पिना मे प्रकाशित क्यांड्री में अल्प्रिक कहानी की ध्रुक्ता में होती नज़र आति है।

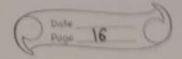
रुपशती भाषा में कहाती रुप्यारी में प्रभाव में प्रभाव शम दाश जिल्ली कई क्लावियाँ विदिनी मुलाकातम् मे अनावित है। अक्रीन वस्तुतः



विदेश अपेंट अमहानापा तर, स्थाश शामा अना ही का गावच का अल्लिप लाइ स्थानिका अपेंट हो रसम आमाश का मन्त्राम के गावच का अल्लिप लेड अध्मास भूलिट हो रसम आमाश समस्माम के गावच का अल्लिप लेड अध्मास भूलिट हो रसम आमाश दस्प्रामी है। राम्य समस्माम है। राम्य अलाजक अल के आविक वाप्रिका थाने ही माना त्या समस्माम

माना ता तम्मा में कहानी आतीत्य कहानी के नेमपा में वाहान क्षिमी भाषाओं का भागतान रहा है। देवर्प ले न्यं तमात्र में वाहान क्षिमी भाषाओं का भागतान रहा है। देवर्प ले न्यं तमात्र में वाहान का भागतान के भाषा कार्योग्रह के ज्ञानी क्षिमी भाषाओं के कहानी आतीत्य कहानी को नेमपा में वाहान का निर्माण के लाग कार्योग्रह के ज्ञानी का कार्योग्रह के ज्ञानी कार्योग्रह के ज्ञानी

समाधित आहमराव असे दादा सिरिवेट ट्रांकरी अर प्रिटी यम हिंदी में अपान स्थान स्य

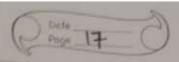


आधा थे. तानाक् था. अप पत्व अतंस्त्रम हाया ह्ना भागा थे. तानाक्ष्य अधिका अपि क्ष्मणा हाया अप्राप्त अप्राप्त अप्राप्त भागा हू । जे कहायुना, त्युवन क्ष सेप्त किय मोतंश्वाती हाह्याणा भागा हू । जे कहायुना, त्युवन क्ष सेप्त किय मोतंश्वाती हाह्याणा भागा हू । जे कहायुना, त्युवन क्ष सेप्त किय मोतंश्वाती हाह्याणा भागा हू । जे कहायुना, त्युवन क्ष सेप्त किय मोतंश्वाती हाह्याणा

अर्थ आसी में कार्शन कार्शन कार्शन कार्थित कार

पंजाबी आमा में प्राणीय जो पंजाबी असा की अंशिक नहामी की पंजाबी आमी के प्राणिक के प्राणिक

पालिया के प्रथा है। महार्म कालाव का



पिक्रमलेकी क्षेत्र आयद कार्य जनमार की कहानियों से का-नह आधा में आधालक कहानी की असपात होता है।

तिनित आधा में कहाती तानित आभा में की की - प्रम अध्यर की भागिकाभरकाधित काताल नामक कहानी शंग्रह के अकाशत के सावा करानी का अंदर भाना जाता है। युद्रमितन न पर्रास्थी, पंडपानी अथवातन , अध्विलत् और भगंत यामचंद्रत आपि लेखना की म्हानियो में लिल अपा में अधिक्या कहानी की अस्त्रात की।

मेलुगु भाषा मे काहानी भाग काळावेकराय और कवि व विश्वम नेताली राभवारण की आपने व मंदेश परक काथाओं से ते वार्त वाहते प्रारंभ होती है। तेलुगु में प्रथम कहानी के लेखन का शेथ अभ्या अधारम और अधिन्त वेक्ट सांक्यापन सक्मा को जाताही। कन्द्रकृषि वीवेशालिशम् पन्तुन्तु, श्रीपद्रकाशभूति : आस्त्री, पिलादी।सित्तर, पालां क्रियाना अपन विभवनाय सत्यामाराया आदि केरवाने की महाशियों की तेलु मु की आरंभिक कहानी भाग जाता है।

भलियालम् भाषा में लिंगी भलयालम् की पहली लहानी पासनाविकारि में हक -मैजवान -बोर और उसकी भिरम्वारी का वयान हमानुख्य अंको में किया गाम है। तकाभी भिवशंकर 190थें, एम.री. वासुदेवत वाभ्य , एस के . पोट्टेक्कार आदि लेख्कों ने मलयालम आधा में आध्यातिक कहानी जा श्री अधिया किया

Page 18

महाय हाथा हूं। अहमी में पर तरक्त अप तरक्ति हामर तहम ब अन्त्राय हाया हूं। अहमीय अन्तर्भ हूं या अत्रावस अन्तर्भ व अन्तर्भाय हाया हूं। अहमीय अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भाय हाया हूं। अहमीय अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भाय हाया हूं। अहमीय अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भाय हाया हूं। अहमीय अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ में अन्तर्भ भी अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ हुट्ट अहमित्र्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ अन्तर्भ हुट्ट अहमित्र्भ में अन्तर्भ अन

मायत अभाग में अहमी कहन- निने के तहार तेष्ण हो भाषा काला प्राप्त हुत तह हुत के अन्य अर्था विद्यास भी अपूर्व हित्त के रिप्तास अर्था हुत के अर्थ अर्था अही अपूर्व आहुत अर्था अर्थ अर्था अर्थ स्थाहण अर्थ अही अर्थ साहुत के रिप्तास अर्थ हुत के अर्थ अर्थ साहुत अर्थ हुत के अर्थ अर्थ अर्थ विकास का अर्थ हुत का अर्थ अर्थ अही के अर्थ अर्थ अर्थ विकास का अर्थ के अर्थ अर्थ साहुत अर्थ हुत का अर्थ अर्थ अर्थ विकास का अर्थ के अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ का अर्थ अर्थ अर्थ के अर्थ के अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ का अर्थ अर्थ अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्थ अर्थ के अर्थ का अर्थ अर्थ अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्थ अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्य के अर्थ के अर्थ के अर्थ के अर्य संवेद क्रिसाशीय अर्थ है। अर्थ में माह माह माह माहिला में स्थान क्रिया में साहिला मे साहिला में साह

में अर्थ प्रान मेहांग में प्रियमित होने तामा जिला निहान में अर्थ प्रान मेहांग में प्रियमित होने तामा जिलाने लामान्य जनम व साहित्रकारों कर निर्धांका जीवा भी पर मजदा किया हन अहरीकरा से उत्पटन अंग्रेलिन और अवाम जीवा की समस्या ते अहरी संबंधित , एकानी व लिखक जीवा जीने पर मजदा किया हन परिस्थितियों ने सामाजिक व त्यात्रिया क्ष्म पर पर त्यापक परिवर्त म परिस्थितियों ने सामाजिक व त्यात्रिया क्षम जिला व्याप निभी क्षम स्थी प्रदांते को नभी कानी ने अपना विपस वस्तु बनाया निभी क्षम स्थी प्रदांते को नभी कानी ने अपना विपस वस्तु बनाया निभी होता है विद्वांत्रियों का अपना स्थान देश कही वाल्का वर्षभान प्रतिबिद्धित होता है विद्वांत्रियों का अपना स्थान देश है। कहानी का व्याप प्रतिबिद्धित होता है विद्वांत्रिया का अपना स्थान देश है। कहानी का व्याप प्रतिबिद्धित होता है विद्वांत्रिया का अपना स्थान देश है। कहानी का व्याप प्रतिबिद्धित होता है विद्वांत्रिया का अपना स्थान स्थान का व्याप प्रतिबिद्धित होता है विद्वांत्रिया का अपना स्थान स्थान का व्याप प्रतिबिद्धित होता है विद्वांत्रिया का अपना स्थान स्थान स्थान का व्याप प्रतिबद्धित होता है विद्वांत्रिया का अपना स्थान स्

अभी कहाती से तापार्थ अस लहाती से हैं प्रो स्न । १६० हैं के आस्त-पास से वर्थ कुन-मेल्प के रंग में रंभी सपार्थ ती रेखावते से कियी गमी है। वन्मी कहाती की हाहि भी है। इस द्वारि में पाहकों में कम्मेश्वर स्थानेड्र बादव , ओहत प्रकेश , अम्मकांत विभेज वर्भा, अन्म अ०ऽारी ऑस मार्कांडेस सादि का ताम अधि पर स्थित है। हम तीड़ी की काराविधारों ने लीवन की विशंगारीयां । विद्रम्वावामां में अपनि के सहिता साहातिकार कक्षेत्र भ्रमी निम्मातिकार के स्वित साहातिकार कक्षेत्र भ्रमी निम्मातिकार के स्वित साहातिकार किया में भ्रमी निम्मातिकार के स्वित के स्वित के स्वित सामातिकार के अपने स्वान के स्वित क

अपन प्रालम के माहनीय के तथर पनी कहाचा की माहनी की माहनी का माना में सम्मान हैं। विश्व वानी कहानी में सम्मान लिया के निर्माण के निर्माण की तथा की तथा के कहानी में सम्मान हैं। विश्व वानी कहानी के कहानी में महम्पान का अपने महम्पान का जीवन कि विश्व में शह्म की महम्पान का जीवन हैं। वाहने में महम्पान की महम्पान

वर्ता आर अपने अग्रे किंग्रे अपने अग्रेश केंद्र क्ष्में वाभी भी किंदी कहानी भी किंदी कहानी भी किंदी कहानी भी किंदी कहानी भी किंद्र करने वाभी अग्रेश केंद्र करने वाभी अग्रेश करने वाभी अग्रेश केंद्र करने वाभी अग्रेश केंद्र करने वाभी अग्रेश करने वाभी अग्रेश केंद्र करने वाभी

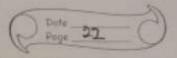
स्नार्श्व अधिक हा. धामवर हिं किया है कि "अभी का प. अभी भाषा की मध्य के अल्पित स्में भावनी हैं कि "अभी का प. अभी आवम्द्र कारापा भी ना माई नार्स में भी का करपा हो। का वारा करका, देपा भी नहीं , विभूत के हाना, में लीवच के भाप कर धनार का नार्ध हो। इ. ... हैस्से अने कर हाना, में लीवच के भाप कर धनार

आलीपुक्सा मुल्म थी छाड़ान्ह मांगुमा

आह. विशिष्ट अंशुमा तिहलाहीय होती ही म तहवार्य 'भावपानी अवृत्ता व्या च्याच स्वस्त ' व्याप्यपा की तैवटनहिल्ला म तहवार्य भावपानी अवृत्ता व्या च्याच स्वस्त ' व्याप्यपा की तैवटनहिल्ला म तहवार्य भावपानी अवृत्ता व्या च्याच स्वस्त ' व्याप्यपा की तैवटनहिल्ला से तहवार्य इन्नेत्रमा आत्रीहणिया अभग श्री सभम्भात्री क्ये अलाव्य पा

प्रांकितिकाता की जिल्ला की विश्व मणार्थ के सद्भी । स्वानिकात अनुभूतियों को प्रतिकालीय स्वानिकात की विश्व मणार्थ की अनुभूतियों को प्रतिकालीय स्वानिकात की विश्व की प्रतिकालीय स्वानिकात की कि प्रतिकालीय स्वानिकात की कि प्रतिकालीय स्वानिकात की कि प्रतिकालीय की विश्व की प्रतिकाली अनुभव का अनुभूतिकात की विश्व की प्रतिकाली की विश्व की प्रतिकाली की विश्व की प्रतिकालीय क

कारामित है जो लिया के तिन है कि अभने किसी अद्भूत में भाग के अभी माधियों का वर्ण हैं के अभने किसी अद्भूत में भाग हैं जो स्वर्ण किसी अद्भूत में भाग हैं असे किसी किसी कि असे किसी अद्भूत में भाग हैं असे किसी कि असे किसी अद्भूत में भाग हैं असे किसी कि असे किसी अद्भूत में भाग के असे किसी अद्भूत में भाग के असी अद्भूत अद्भूत भाग के असी अद्भूत अ



के ली साहित्य. में किरिंग क्षेत्र अर्थ्य है। * को ता लिखा किर्या तरिवर्य क् अ लीवन या ग्रांच सा ज़िंगा तर्थि को वर्णात्य हूं त्यां सामातिय तरिक्तियुत्य क् औरवर्षि के कारिश तृत्य हूं मना का वर्णात्य हूं त्यां सामातिय तरिक्तियुत्य क् औ तरिवर्ष्य के कारिश तृत्य हूं मना का वर्णात्य के त्यां सामातिय तरिवर्षय क् अ तरिवर्षय के कारिश तृत्य हूं मना का वर्णात्य में किर्या अर्थित भी अर्थिन में मान के मलिस साशिश्ता का वर्णात्य में किर्या अर्थित में अर्थित में मान के मलिस साशिश्ता

कश्य अपर भिल्प की नवीनता

कार्म और भिर्म की स्मित्र हु की की है निभी कहाती, में से पी निमित्र में की मिला हू विना कहाती, में त्या की मिला में त्या का कार्य भी कार्य भी कार्य में त्या कार्य की मिला हू विना कहायी, में त्या का निमित्र अप का तिना का निमित्र अप का तिना का तिना का निमित्र अप का तिना का त

स्थिति के स्थान स्यान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्था

बाह, averag अन्यहारा, तर अपन, लय तक अन्या का किन्दि राजप ही इस्तान्त्र वामाहप् 'नरंत्रते ताल्यविच इस अधार क् अन्नेरव अहायुमार ही

याठोलरी कहाती के अंतर्वत अन्य बाराओं में प्रमुख रूप से मान्यत कहाया ' अहता कहाया व साम्रेज महम्मे की तर्म भी गर मार्भ क्षीयप कालालाजा भी स्वापम्पार व वुन्युक्त मार्थ के सामालिय-मानुष्य नतात् था. तम्बेप । त्या नता क्रा ही लागुल्पद्ध हिन्दी लाहण्य म प्रवत और जात में जुड़ी अध्येक स्थिति-परिस्थित को अत्यंत्र अपापूर्व वंग भे भिन्निता सिमा गमा है। जीवल में वस कड़ अवर्ष का भागता परने में उसे जिन १ वार्ष तथा तनाने को अंकता पड़ा है, लिया जिल आयोही - अवयोही से युजर में पड़ा है। असवी स्पष्ट हात हमे याहोत्तरी साहत्य में हिवाई पडती है।

ठनाशुल्की हिंदी कहापी थे. क्रिका विषय अभाग असमिक हिंदी काराती की अधिकां प्रयालियों को सभाहित करने वाली साठोत्तरी हिंदी कार्सवी में किए गए छिल्पगर अभेग विभवसिखेत हैंह-

मोहभंग की स्थिति का विभागत हते प्यान का भावित्य प्रातः भोवभेग मार्कित है। अस्ट स्थाप्ता के महान्त्रामा निकार निकार ने किली मेहार अराह है।। है। प्राथमालाक, निर्मायकी, निरम्भू कालका किला है। है। ने आम आपनी के भन में असंतीम म्वं आकार्य जी आवना जो प्रणामा भाशिक्तरी कहाती ने भोडभेग की म्येति को स्वम स्थल और क्त्राक्ष अप के आभुष्मात्रम । स्था है

K sale At

ANY REPRE TOPE PICE

मार्था के हिंदी हुई हूँ तिमक्षे तिराधिस्त्वरेश अधिव हुई हूँ तिमक्षे तिराधिस्त्वरेश आधिव हुई हूँ तिमक्षे तिराधिस्त्वरेश आधिव हुई हूँ तिमक्षे तिराधिस्त्वरेश अधिव हुई हैं तिमके वाहिता हुई जाति ह

अववादी चेतवा की विस्तृत व्यंभवा

४-१६० । भिल्प और भाषा भाषी

की छिटी में पर्ता - विस्वरी आम क्षेणचाल की आम ही आर अभित के महिल्म की आमा वहां हे अपित अमुर्भ की आमा वहां हें अपित अमुर्भ

विश्वमं स्व में वह अवसे हैं कि हिंदी वाहावी भी अहत्वपूर्व द्यादा हानी वाहावी अगर साहोतरी वाहावी में अवदेशा आर विश्वम असवा को स्वर पर त्यापक परिवर्तन किए गए। इन वाहासियों का विश्वम असवा भोगा हुआ अवार्ष हैं आध ही इस ओड़ों हुने यपा की अनुभूति की अध्यादा आर परिवेशात्यापी अनुभक्तें, प्यत्वार्थीं, सत्यार्थीं की माआठीका आयाज हैं। कर्मा वर्ज्य ताष्ट्रवावार् के खिळाली. में भी मत्मी भटप्पतित् अधिमा विभावारी क्रिक्ता वृत्त्व कुळात ब्रिक्ट कुळात ब्रिक्ट कुळात क्रिक्ट कुळात क्रिक कुळात कुळात कुळात कुळात कुळात कुळात कुळात क्रिक कुळात कुळा

मारत को जांकोरी शास की क्यापना को पूर्व । शिक्षाकारिको क् अध्यार्थ ' मान्यी, यर्थ, न्यी, क्यी, व्याप, अंति अंतिष्या. 12/8/101, त्रंताड्य, या. क्षा मेला हुआ या किंदी तक आधार का अवनदा है , डत्तर अध्य में हिंदी और सारभी भी छिहा देव वाल स्काल भी आलागा नम् । ग्रिश्म व्यम् अवर्षः अनेति संख्यार का संस्थाय स्थाप संयावताया बाह्य मा किये व्याजांपर भे. महा १९४५-१ क् बाद. भिट्टा की १४०१प्र म केल तर्वपूत् हैगा। इनमें मद हिया तमार का गर्म पूर्व में बद्र । आह्नाश्चर विहालकी, ये आत्राप्तर आल्पान आताम या भिया का अस्पाम कवार्त तथा इक्के आक्यानीयक बस्थमन अवंदर्भ भगान SE बुड्म डिस्पेट के अद अरकार के स्मी 151811 भी अरक्साहत देने में मार्कन मार्थका प्राधिका । स्वांभारा में इतरांप्र आहप नार्कार वे कि मालका | प्राच्याहर वर्ष में अप्रिम अप्राणा विभागी (वर्णाम के अपरांत अध्य स्थार में किया की भिन्न के सुनार हेते आर्थिक व । त्रिश्मिक करम दशक । इससे व मवल । शहा भी भरीति से स्थार हैआ वर्ष तामकार में भी विकाशीय हैआ। गिभाव आज्यान मानात कार अध्यान की म्यानिया को अट्डी तर के प्राथम पर्या स्मार वसके सर्वेसार आहता अर्थ नाभार पा जान्त्रीय । हाना।

अध्य में अंग्रेसी अपन की स्थापना के प्रवि ही सकी स्तर्र पर 18 दें और अध्येम स्थाप संस्थाओं का प्राप्त त्यापक में अपन हुआ आहें सभी आव्य राज भी स्थार का तथा अपने और आय अत्यर आपन में अत्यर हिती और कारकी भी 1981 देने वार्क स्थाप की के विशास्त्र के सकता में देशी आपका शाह भी पड़ हैआ । असा ता असा ता असा का असा के असा का अस का अस का अस का अस

मिला स्मिया अप स्वाहम् में अप महत्वर्क पत्य हूं।

स्ति क्ष्मित कर्म हूं।

स्ति तामित कर्म हूं।

स्वाहित कर्म हूं।

सभाज में भिक्षा के भहत्व को कम करके आकार वहीं जो स्मतम् यह त्यात्रीयों में समक्ष्य कार्या है, आधिक विकाश में प्रवास करता है और ज्ञान और लवायार को क्लावा देता है। भिक्षा त्यात्रीया, सम्माणिक और वान और लवायार को क्लावा देता है। भिक्षा त्यात्रीया, सम्माणिक और विवास के किन अने कर्म के राग में मार्थ

C Delle 28

क्षित अधिता, या तत्रमण्य म् अतर करणा हू । त्रम्या अगव्या न्वयाप्त्र अपित व्याप्त्रम् क्षित्रका विवाह्यप्त स्थला, त्या तत्यप्त हू । त्रान्त्रभू अप्त अप्त अप्ताला क्ष्म विवाह्य क्ष्म त्रम्याला क्ष्म विवाह्य क्ष्म त्रम्य विवाह्य क्ष्म विवाहय क्षम विवाहय क्ष्म विवाहय क्षम विवाहय क्ष्म विवाहय क्ष्म विवाहय क्ष्म विवाहय क्ष्म विवाहय क्ष्म विवाहय क्षम विवाहय क्

अधार किसी और त्यापी को समूझ और संपद्ध कारती है शिक्षा भावत को भावता । शिक्षाती है। एक बेहतर प्रविध को परि के लिए हर त्याली का भिन्न होना अवश्यक है। यह आप भिनित के पा नाती त्यावद औ की कामना पा कामालाम करा डवेब करें अर्थंत के सार्थ कर सम्प्रे हैं। जिस्ता कोंगों भी स्वर्थ और देनेसा में वारे में मामाज्य को भारती वास्ती है। यह अवने जीवन की जुठावला में खेलार करपा अंद त्नायपुर्ध अंद समात या त्नात्य सामालक काम पहलाता है। जिला को में अपादनता और स्पनादमन्त को वहाती में अप उदाविता और कारी की कराता देते हैं। शिक्षा त्नापपु थी अप्रायाहिय समया पता अनम् त्नापुष्य गा क्यांत्री कार्य कार्य में प्राथम है। वहीं मध्येना अस नमाप में कर त्मला की मालका विभाव के लिए समायिक करती है। वचा समाय के नित्त किया किया किथिया कार्या कार्य के विषय कार्य कार्य कार्य कार्य अपनित्रका नाल तथा ख़ीशास अतमत्वा अत्राप्त ही छिहा लाग. भी रका अर्थ शितिया के वारे में भाभा जो मानू कारते हैं। यह अर्क जीवन की अolacut से मेरनार करवा है । डार्स टमायानी डार्स समाय ला जापम मामाधिक जाल तंहतावा है। भिवार बांगी की अपादकवा By a motorbackle set soly of

मेगी की जाक्षित जिल्ला और अवन्ता के ने ने क्षिण अंति कार्या के कार्या का जाक्षित अवन्ता के कार्या का कार्या कार्य

भ ठक तर ग्रंभार्थन को रमाय राष्ट्र, हिमा। कर्मा को यान क्ष्मणील कर्म के ज्ञान्तम रही प्रताति माहिल्स म्याक्रम कर्मा अमर करने ये अटट. को त्रिक्रम का नगति स्वान्तम स्वान्तम करम्य प्रमार करने ये अटट. को त्रिक्रम का नगति स्वान्तम का स्वान्तम भिरमण ह उका परह कराया को मारामा मी. सामानाम को उक्षम म्यान्तम भिरमण ह उका परह कराया मूर्क, उन्हमाल की स्वान्तम, माराम्यम

अधिया केमी जी दर्शासिक के की त्रिक्त में अस्ति की असमिता, को अन् मं त्रिक्त सम्मि के इस त्रिक्त आक्रम नामान नामते जेंच्या का सामान वान का नामान नामते जेंच्या का सामान वान का नामान नामते जेंच्या का सामान का नामान नामते जेंच्या का नामान नामते नामते जेंच्या का नामान नामते नामते जेंच्या का नामान नामते नामते नामते नामते जेंच्या का नामान नामते न

माने क्षानित क्षानित की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान के क्षानित के क्षानित के क्षानित की स्थान की

कारित प्रथम की अध्याप होता है। जिन्हीं की अध्याप अपना की हिंदा कार्या है। ज्या की अध्याप की अध्याप की अध्याप की अध्याप अपना अध्याप अध्याप की अध्याप के अपने वाल के वह विद्याप की अध्याप की अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप की अध्याप की अध्याप की अध्याप की अध्याप की अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप की अध्याप की अध्याप की अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप की अध्याप अध्याप अध्याप की अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप अध्याप की अध्याप अध्या

क्ष परिवर्तित । स्थिति को स्माद काहानी को स्माद आर्थापको का स्थान अवस्ट डिमा ड्रोस करावी आर्यातमा मी का पंपरा बमाधीर हरी

भुवालोतार आलांचता के अतर्थत अपार्म वर्षुलारे वाजांधी औ क्षित आसी हा में प्रस्तुत कहारी श्रीका ह्यान आकर मार्था है। इसकी अस्कृष के पालाइन के श्रीसूत्री उनाम आर्थित अस्पा है। इसके माणिर के पालाम में देसरा महस्वति नाम हेवी में कर अवस्ती मा है। लिव्हान अपने अल्ब-लीवन में, तिवृत्य के ठंगे। अर्थ, व्यह अहम्मः मल्ली और अशते 'जी भूकिताओं में तिसी भी काति भी समीवा 'भूल्य-मान कारा साहात्म में जा अला के आला तर अरम् या आंतर मिना अन्तर्भी भी दे सक्से पहले काहावी की समीक्षा के लिए माल्य-प्राप्तिमाने में कार्य कारप् के रतार्थ में अवाह कार्य है इक्से इक्षर कह हमार्थियतामक की में अहर्त का मेंकेत किया वाद में वाभवर और किस तथी कराती। में कार्य अतिभानों के आधार पर क्या सर्वाक्षा की एक नाभी भीतिकी विकारित करते ची गांभिश्र भी

भाविभा अप में कह सकते हैं कि आंतरिय समय में कथात्मका गया भारित्य की सक्से लोगाप्रिय विधाओं में से क्या गरानी जी और विभाग का समावेशव होते असा अस महासी पारिषय और परिष्वा होने कारी | इसके उपरांत महानी भी और समीक्षाको मा स्थान सामण हमा अर द ग्रंभरपार्यक्य इसका विश्वमान करने करी कहानी आवर्तना का भर्त परिद्रभ्य असं ही संतीवण्यक व हो पश्तु वर्तभान समय मे यह मिनि सुरुद्र है। विवेदी दुश में सरस्वती ऑर बुंद्र पंक्ती पानिणाओं के कीक ही महाकी का थदा-मदा प्रमासन हुआ कि समभ लग महानी सालात्ता भी भीट् क्ट्रिंग टर्निस्तीय म्यून स्वपुत्र हेन्यम अपनवर्ग वाही et Hall

कर मध्य का कर तमित ता शर्र वह कर्रहारमा अवहा या श्रम मी कर्म कर तमारा खुन्स अभा अभा माहासुक्द कर्णन भी, जनास्त्रम् म् अन्मत्यंत्र ठम्म पक् क्ये अन्मत्यं अनुक्ता म् अन्मत्यः स्थानाः क्रम क्ष्म् क्रमाण्यं उन्म दिस स्थात एता तक्त्रम् क्षे तन्त्रम् वा तन्त्रम् वा क्ष्माण्यं क्ष्माण्यं देश्याअनुत न्यूरं श्रम्भात क्षे त्रेश्याः ता तन्त्रम् स्थापः व्या

अनुश्च हमाय अफ्रम्ह अत्या है। अन्यान अदेशित प्रमानमा भी तैन्यम मान्तिसम् नाहिता स् मन्तिय अहम् अस् अहाया भी काम तंत्रता एम्प्रमूप हैंहै। अंग्रियम साहिता स् मन्तिय अहम् अस् अहाया भी काम तंत्रता एम्प्रमूप हैंहै। अंग्रियम साहिता स् मन्तिय अहम् अस् अहाया भी अति अध्या काम करण है मान्य स्वाप्त मान्तिय म् अन्या अध्यात मु अहाया काम नामित्र अप अप अध्या अध्या मान्तिय म् अन्य अध्यात भारतामा मु अहत्या अपि नामित्रम स् विश्व स्वाप्त मान्तिय म् अन्यात मु साहत्म्यात्र, कामि नामित्रम, या अख्या अप स्पर त्रियम अन्यात मु साहत्म्यात्र, कामि नामित्रम, या अख्या अप स्पर त्रियम अन्यात्र मु साहत्म्यात्रम, कामि नामित्रम, या अख्या अप स्पर त्रियम अन्यात्रम मु साहत्म्यात्रम, कामि नामित्रम, या अख्या अप स्पर त्रियम अन्यात्रम स्थाप वाहतात्रम अप व्यव हिमा अप्ताप्त स्थापन स्थापन स्थापन अन्यात्रम स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन अन्यात्रम स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन अन्यात्रम स्थापन स्थापन

Page 33

क्रिंग क्षेत्र अपना क्षेत्र क

मार क्षेत्र के माल के आलाद कर साठगासीय अंदर स्पत्न में को गोंच विद्य दे धना । उटहान, धनामें त्ये लाह्य त्रियमें विभा में के किहान हैं के या वहां के स्वाहित्त में Galetaria अवाहित्य में विवाहित्य में Galetaria अवाहित्य में विवाहित्य के विवाहित्य विवाहित्य के विवाहित्य विवाहित्य के वि

मंभीक्षा में महाती

कोन्द्र करती है। विकास के प्राथित के अधिक कर्म की अधिक कर के निर्मा के अधिक कर के निरम् कार्य के अधिक के अधिक

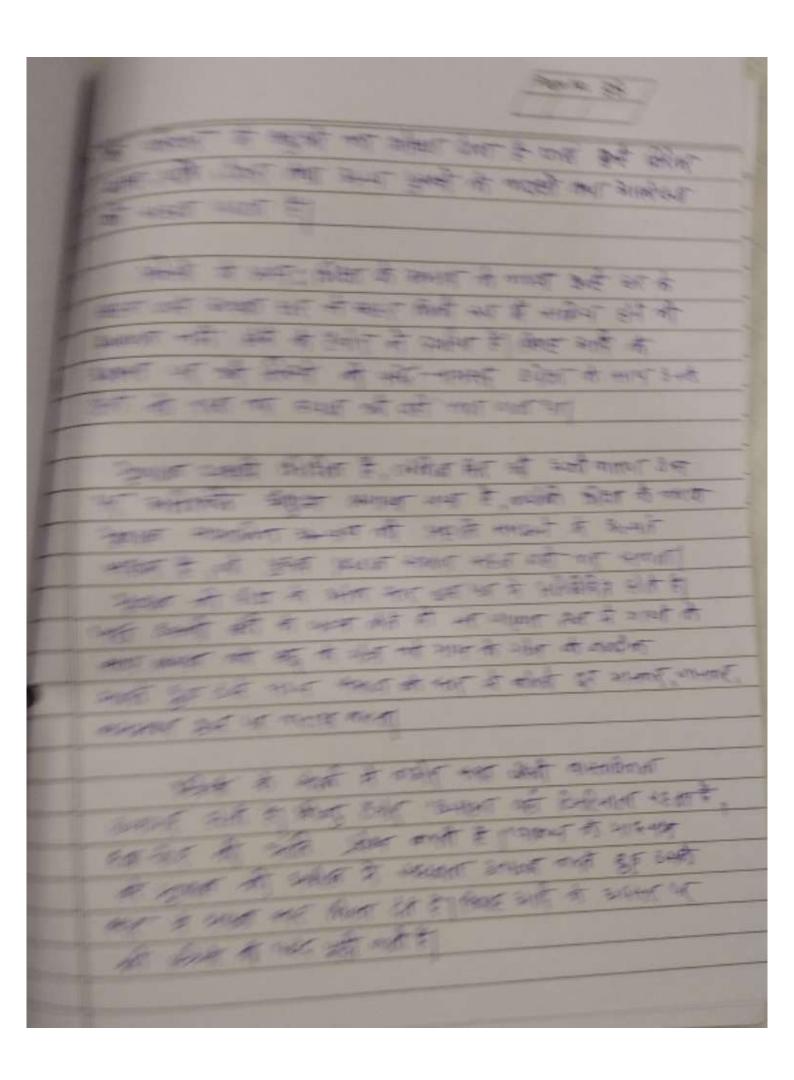
तर कहाती. अम्बद्ध आ. तत्तामा हेडारी तर्मित्रपुद्ध हेडा डार्सर तेव आभाषिक जेतु. हार अनाववान्त्रक अव्यामाड्य. ह । आले क् डाल्यिक तमार्च में, जार्थर पर कहातुर्ग से तमातक कार्यर में तमार्थर में जार्थर भी तहतरांग्रेस महास्य जार्थर में कहातु. में तहतरांग्रेस महास्य

देश क्षित्र कार्य के अन्त के अन्ति की अहमी अभवान्ति क्षित्र क्षित्र के विकास के वित

Page No. 35 म भिर्मकाता को अला हिया दिहीलेडीशा की क्लाली में विहादन में जाती, ' पुनात्री अपने अपनिकृतिकात्रमुन सत्ताच्या, क्या त्रिवापू देति देखा मा सकाया है। इंडीलेक्टिया स्पी अहासी सी क्रिय वर्गे क्ये अलाहरू में जन्मितारी वापिनामानिताद ज्यादि कामानिताद अप उत्पादितात अप कामा है। शक्ति में अभवा जो प्रवादित अविशिवित हैने की वायुर्गाहर देशनेशियाई neigh at mor any at upontain eld #1 मिल्राह्म अं कालाबी अं कालाबा कालाकार मान कालाकार क्षितास्त्रमात्रक केलाक का निवाद कर्म रहा हमाली में में कराली हपालिवेशावाद के विश्व क्यांने करते हुए वकाश्चर हुई। अविशिधा के अहाबीकारी में एक यह के आआजिक अर्थ आविक तपन न्था अधारात आ 'अवतारेश तमपा भी अधिषे अपर अद्भी व्यवन क्याप्ति करा है। जे करायुक्त अवन अह देशक कार्य के अला वर्ष आए जाइ जो वक्षीती है। भिगापुर जे करावी शिगापुर में करावी लेखव वहाँ की स्तरी अग्रेश आलाइम में हैं आरे प्रम आलाइम में रेली गई कारावी भीशापुर की पामाण्य और अंप्रकार कारावी जरवन ही अगिरिट्टेम इस्त उसके बाद अपत्याश करवा उत सामी आधाओं # +4 of ment #

Pego No. 36 क्रिपयान में कहानी क्रिमण्या में अध्यावक कराया भी जेमलात कर क्षित वाअत्त्वी अन्त्व नाच् म् लापा हा इव्हाव अतथ्य अहाता मा अन्त्राप्त कर साआालक जनमात्वाद क् साप्रहेश्य समा उपहां मात्रुयात्य लिटलिया वास्त्र तार्त्रमें वर्ष वरी केशलिया के नेली मानवात्रात महट भावना था का ग्रहमी में विना क्रिसी प्राणेह को यथि की स्तम होती नाहिए याहे वह वाहर अवार्ग हो भा तावतान मूं, हिंद अहक्ष्मकर्त अहत स्व में तिम्व त्यान त्यान कर्म अन वार्ष अंतर रेटम अंगर् के चाराह पर मंदीत अंग्रामिक बादान अदान में सहियों को साम्रेस आजादारी के परिवास्त्रमण आविकाम रियासको र्व अत्याधीका विक्षित अंतरित में विक्षाति के विक्षाति के प्राथित के प्राथित के प्राथित के प्राथित के मार्था कियों वादी के छमाई अभी दिस सम्मार में छियों बादी मान्ता जा कालाय रच सं हाता सम्मर्गाहर कार ही शह 3300 ईसा धर्म स्रें का 1300 हमा धर्म के बोच शासील में वार्म. केमेडिया को दाहीया पूर्व धारीया के समये अर्थ देश के स्वर्म में जाता जा सकता है। लेकिन यह इसके आबीन शतेश्वर से करी एयादा आधीर है। दाक्षीठा-ध्वी भाभियाई, जहानी जा अभीक्षियेत कर्मा. कार्यात्रका आहे द्राह्मित मार्थित मार्थित भारता मार्थितिहरू मार्थित है। मिर्शिक्षिक की महातिथी कारा होता है। इत्होर्ने मनविद्यातिक परिलता वार्क-थालिक न की क्षेत्राव्यया भी प्रमुत किया उवका महत्य भावता भा क्षि कहाती में विवा किसी प्वितिह के अविध भी स्वाम होनी ताहिका यामित यह रतके अम्पीटा रातिशास से कही ज्यादा राविक से आवीक में कामा दीरा महर गमा

Page No. 87 कार की कहाती । पत्नी का पत्रा हारि है हैं सामाजिक देश हैं अहम के अध्या की गर है जिसमें अभेको सिकामप् हें सामाभिक देश ह अपट की की का मार्थ का नाम ह भिम्म अ मिक्सित हैं। इ साल के विवाहिक जीवन के अशंत वह अपने जीवन को मेर होग्र अत्य तक कार्य के प्रमान तह अन्य लाक्षेत्र प्रमान कर क्ष वहाँ क्ष्म तम स्थली है भी अगमी ताम नाम हायाही लोग विसे इंश्व भावते हैं वह पुम्हारी सहस्मी में युझे कभी वहीं मिला लिस छिट विलापा यो देश यह असे विस् उतार केहारा स्वभाव कहारे की आई की तरह अर्ग होता है तो में अपनी मती थांबती की लेशनी की तरह पति देवता को पींच देन के कलाथ विश्व-देवता ने ही तीय देते की स्वेदा अरती। इस संसार में नारी का सरका मंत्रम जला है। यह में पा अभी हैं। अब मुझे तुम्हारी जो है जरूरत 明 राष्ट्रीय सारोलय क्य तर्र म भगवयारी यहांसे कुळा. में विदे नागरेंगोर मा वाभ उल्लेखनीय है। 'पत्ने मा पत्र 'नाभक कहानी उल्ले मि स्था है। पत्नी गा पत्र ग्रहामी पत्र भीका में कियों गई meit म जिसमें सेवाद ऑर साहिसीन तत्वों मा प्रयोग मर्स द्वार दो लामीयों तथा विचारों के दर्भाव को अपागर किया गणा है। ध्य महाती के भारतम से राष्ट्रीय आपीलन के समय लेखन के भनेश के प्रति सम्मान और समर्थन मा भाव भी अपान्त हापा है ' । तुन्त्र का प्रा भागित इस नामातुक वापावद्व में देशोर को सामंती आक्रोंभ का भिकार भी क्वता पा होगा विम्तः इस महानी ना भूल सदैस पुरुष - प्रथान समाज भी तीरवी मेलायन कारता है। असामि यहमी भी नाशिका मेलाय वर् ताम



कारिकार्ग के संगित त्रिया के मिरिया क्रिया क्रिया के अंगित क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

कारण हो।

क्षित्र भारत होते हुन स्वामा अपूर्व कार्या होता है। स्वाम स्व

क्लार में लोजर में आध्यमध्ये तम अस्पित है पर असी कांक्र के भाग-निवा की भूज के जाने के कह अर्थ कार्य कार्ज दार अंतर्ग क्रम मेंडु के माण गमर कर्मद मान ज्यान है और वह द्वर को बनाई के किए अभी की करत के अधिका में आ जाती है असेता दल अभाज में जह बाद में के अर मल्या गावा हे वहां किंद्र को कैसे प्रथा वास्थाता है। भा ने वह अभी क्यार तो कर तो यह कर द्वा कियर है के रिक्ष त्यह यह क्यम ने अने और अर्थ आई को समियाह क्ष की अमा धा तह वह क्य भई मिल्यू उल्ला आई मारा माना वह विस्त्रती है कि उत्तरा क्यान काता स्वीन उत्तरास की सावता वा काता, विसा नहीं हुआ न्यांकी वह व्यानी थीं। काल-पर्धान को कार्य हो गहा को भूगाता व्यक्ती पे अस विष क्या औं अस कर्यता का अर्थ पती पा के लड़कामें क्या भूल्या अतल कल है कि उनकी स्थान भी नहीं होती और उस लह महिलाओं क्या किया से रिल्मिटीय तत्ता किया असी असी असी अहे. तह सुर वह क्षा अव्य भाग भाग कियार दुईन अपने कार वह मिर वह कर अन्य देशका गए तिक अभि है एक उथारी भारी के लिए उथके पति के माला देखते आते हे और इतकी का हो तलावा शति है मियाह के किंद्र दल्की का भुद्द होना जाली है। इस पर आर्थ किंद्रते क्षण वह दर्भ नार्य के उसे देखनार सेवामर उत्पूर उत्पूर नाकरेग, त्य सहारवापा कवता है । विश्वे देवते अवभूती की मेहार्में प्यादा प्रेकी शेर्स है नेवल कर कर से के वह स्पार्थ है लेगा वह भी पुता प्रदा में भार अवस कार नाम के वह कार्य माद आद जाद आता तर होता देव के लिया यह कार्ड देवार अवस्था में निसी तर पता न थी।